. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: M

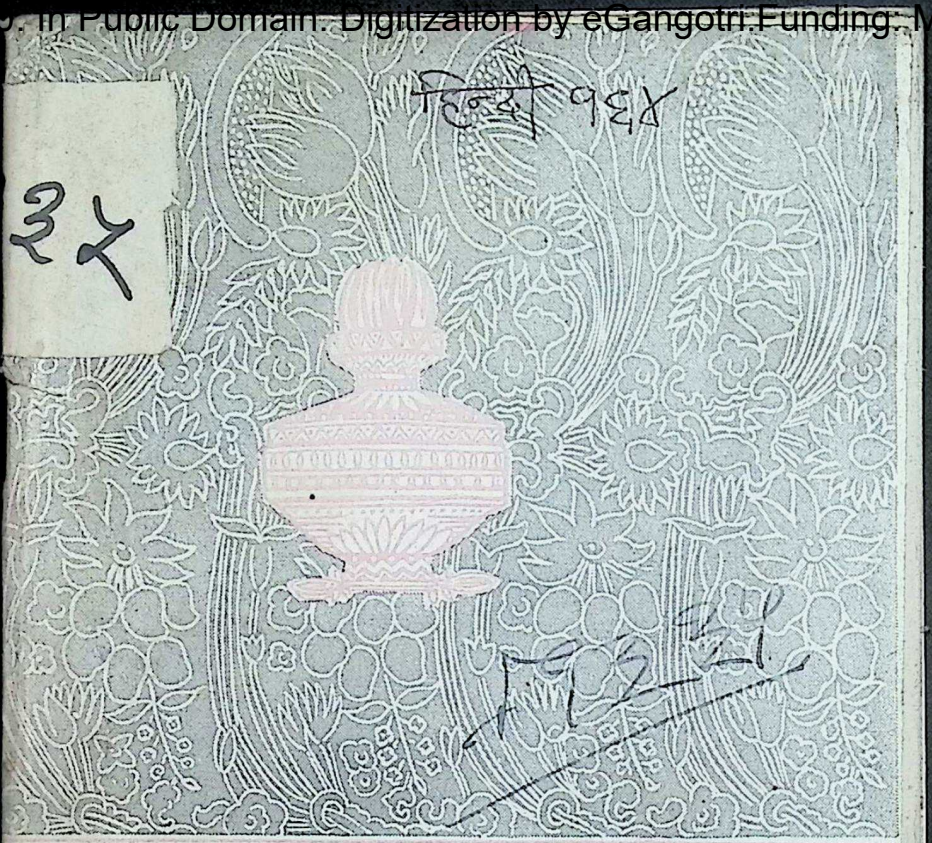

# ालापानी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

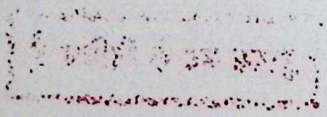

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : ५७

# कालापानी

अंडमान-निकोबार द्वीपों का रोचक परिचय

लेखक
शांडिल्य

१९५४
हिन्दी १६४
पुस्तक भेंट के निमित्त है

संपादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

# पाठकों से

आपने कालापानी का नाम सुना होगा। कुछ लोग सोचते हैं कि वहां का पानी काला है। कुछका खयाल है कि वहां केवल खूनी लोग रहते है। पानी वहां का काला नहीं है, पर यह सच है कि पहले वहां खूनी लोग भेजे जाते थे, पर अब नहीं। अब तो उन द्वीपों में बस्तियां बन गई हैं और वहां वे सब काम-धंधे होते हैं, जो किसी भी शहर में होते हैं।

इस पुस्तक में कालापानी माने जानेवाले द्वीपों, और वहां रहनेवाले लोगों का बड़ा ही रोचक हाल दिया गया है। इसे पढ़कर बहुत-सी नई जानकारी मिलती है और उन सुंदर द्वीपों को देखने की इच्छा भी पैदा होती है।

आप पुस्तक को अवश्य पढ़ें। आपका ज्ञान बढ़ेगा, नई जगह की सैर का आनंद मिलेगा।

—संपादक

CC-0. Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

# कालापानी

: १ :

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसने कालापानी का नाम न सुना हो। अंडमान और निकोबार के द्वीप 'कालापानी' के नाम से मशहूर हैं। 'कालापानी' नाम शायद इसलिए पड़ा कि अंग्रेजी राज के जमाने में भारत के उन कैदियों को इन द्वीपों में भेजा जाता था, जिन्हें किसी बड़े अपराध में जिंदगी भर की, या पंद्रह-बीस साल की लंबी सजा दी जाती थी। घर-बार से हमेशा के लिए अलग करके यदि किसीको समुद्र के किसी टापू में बंद कर दिया जाय तो क्यों न वह अच्छे पानी को कालापानी समझने लग जायगा? इसीलिए 'कालापानी' की कहानी में बड़ी पीड़ा और दर्द छिपा हुआ है।

सन् १८५७ के गदर की कहानी हम सबको मालूम है। किस तरह उस गदर में हिंदू-मुसलमानों ने एक दिल से अंग्रेजी राज को देश से मिटाने के लिए कमर कसी थी। बच्चा-बच्चा जानता है कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई उस गदर में बड़ी वीरता से लड़ती हुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



शहीद हुई थीं। उस कहानी से कालापानी की कहानी का इतना अटूट संबंध है कि उसे जाने बिना हम कालापानी को नहीं जान सकते।

सन् १७८९ में आर्कीवाल्ड ब्लेअर नामक एक अंग्रेज कप्तान ने इन द्वीपों का पता लगाया था, मगर इन्हें आबाद करने की बात सोची गई वर्षों बाद, जब सन् १८५७ के गदर में अंग्रेजों से मात खाकर जिंदगी-कैद की सजा पाए हुए भारतीय देशभक्तों को ठिकाने लगाने के बारे में अंग्रेजों ने सोचना शुरू किया। इस तरह उन देशभक्त कैदियों के पहले जत्थे से इन द्वीपों को आबाद करना शुरू किया गया।

बाद में हर तरह के खतरनाक कैदी यहां लाए जाने लगे। कुछ समय उन्हें जेल में रखकर फिर खेती-बाड़ी और व्यापार के अलावा घर-बारी जिंदगी बिताने की सहूलियतें दी जाने लगीं। इस प्रकार बाकायदा एक 'नया समाज' बनाने की बुनियाद वहां डाली गई। सन् १८५७ से लेकर सन् १९४२ के शुरू तक हिंदुस्तान से खतरनाक कैदियों को वहां भेजा जाना जारी रहा। मगर उसके बाद जापानियों ने उन द्वीपों पर कब्जा करके इस सिलसिले को तोड़ दिया। जापानियों का कब्जा तीन साल तक रहा। इसी बीच नेताजी सुभाष-चंद्र बोस के नेतृत्व में इन द्वीपों में 'आजाद हिंद सरकार' भी बनी। जापानियों की हार के बाद कुछ समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



के लिए फिर से वहां अंग्रेजों का कब्जा हुआ। फिर १५ अगस्त १९४७ में भारत से अंग्रेजी राज खत्म होने के बाद ये सारे द्वीप 'स्वतंत्र भारत' के अंग बन गये और तबसे ये कैदियों के द्वीप न रहकर भारत के सभी नागरिकों के द्वीप बन गये हैं। अब वहां किसी कैदी को नहीं भेजा जाता। आजकज वहां पूर्वी बंगाल से उजड़े हुए हिंदू शरणार्थियों को बसाया जा रहा है।

इन द्वीपों की संख्या ढाई सौ से भी ज्यादा है। किसी द्वीप का रकबा एक-डेढ़ एकड़ का है तो किसी-किसी का हजारों एकड़ का। समुद्र के बीच में हरे-भरे जंगलों से लदे उन द्वीपों का दृश्य बड़ा सुहावना है। मोटरबोट या नाव पर सवार होकर उन छोटे-छोटे द्वीपों के दर्रे से गुजरते समय जंगली पेड़-पौधों से छन-छनकर आती हुई हवा की सुगंध से ऐसा लगता है, मानो हम किसी स्वर्ग में आ पहुंचे हैं।

कालापानी के द्वीप कलकत्ता या मद्रास के बंदरगाह से कोई आठ-सौ मील दूर हैं। जहाज पारी-पारी से इन दोनों बंदरगाहों से यात्री और सामान लेकर चलता है। समुद्र की लहरों पर दिन-रात लगातार चलता रहकर वह चौथे दिन कालापानी की राजधानी 'पोर्ट ब्लेअर' बंदरगाह में पहुंचता है। इन द्वीपों का पता लगानेवाले कप्तान ब्लेअर के नाम पर इस बंदरगाह का नाम 'पोर्ट ब्लेअर' रखा गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



सन् १९५० की फरवरी में मैंने वहां की यात्रा की थी। रेल की यात्रा से समुद्र की यात्रा में अधिक आराम मिला। कार्तिक से चैत्र तक समुद्र की लहरें कुछ शांत होने के कारण यात्रा में खूब आराम रहता है, लेकिन उसके बाद के छः महीनों में लहरों में तेजी आने के कारण जहाज इतना हिलता-डुलता है कि डेक और तीसरे दर्जे के यात्रियों का जी मिचलाने लगता है और उल्टियों के मारे मुसीबत हो जाती है।

फिर भी जहाज में आनंद खूब आता है। एकरस और अटूट चाल से समुद्र की नीली छाती को चीरकर अपने पीछे मानो सफेद सड़क बनाते, हुंकारते और दौड़ते हुए जहाज को देखने में बड़ा मजा आता है। सुबह से पहले जब सूरज समुद्र के काले पेट से एकाएक निकलकर अपनी लाल-लाल किरणों को उन चंचल लहरों पर बिखेर देता है तो वह दृश्य देखते ही बनता है। वह नजारा भी कम सुहावना नहीं होता, जब दोपहर को सूरज की किरणें लहरों पर चकमक-चकमक नाचती हुई चकाचौंध-सी पैदा करती हैं। फिर चांदनी रात में लहरों और चांदनी की आपसी आंख-मिचौनी भी कम सुहावनी नहीं होती।

चौथे दिन सुबह से ही हमें द्वीपों की झांकी मिलनी शुरू हो गई। वे दूर से समुद्र की रीढ़ की तरह उभरे हुए लग रहे थे। पोर्ट ब्लेअर के कुछ निकट होते ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



सामान-असबाब बांधने लगे और जब बंदरगाह के पास आये तो किनारे पर नारियल के बगीचे पत्ते हिला-हिलाकर जैसे हमारा स्वागत करने लगे। जहाज की

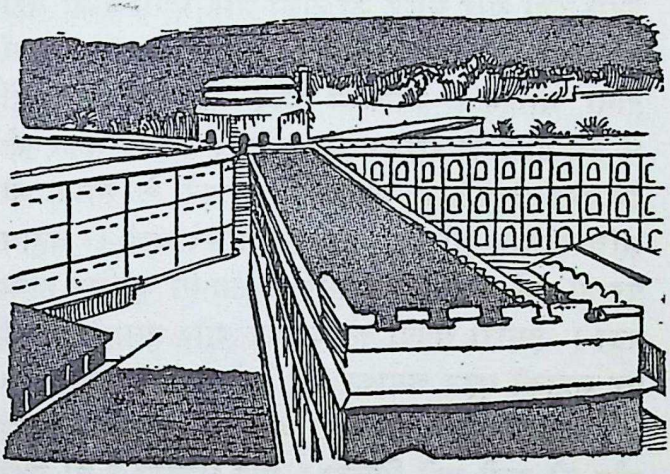

समुद्र के किनारे टीले पर बनी जेल की इमारत

चाल अब काफी धीमी पड़ गई। कुछ मिनट बाद ही जहाज उस जेल के किनारे से चलने लगा, जिसमें वर्षों पहले भारत और बर्मा से लाये गये कैदी बंद किये जाते थे। समुद्र के किनारे काफी ऊंचे टीले पर खड़े जेल की इमारत बड़ी रोबदार थी। जहाज जब बंदर-गाह के बिल्कुल पास पहुंचा तो एकाएक किनारे से लगना आसान न था। कितनी पैंतरेबाजियों के बाद वह कहीं किनारे से लग पाया। किनारे पर लोगों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



भीड़ पहले से ही जमी हुई थी। लोग अपने सगे-संबंधियों को लेने वहां आये थे।

जहाज पर सवार होने से कम-से-कम चौदह दिन पहले हैजा और चेचक का टीका लिये बिना यात्रा नहीं की जा सकती। टीका लेने की डाक्टरी सनद साथ में होना चाहिए। कलकत्ता और मद्रास के बंदरगाहों में उस सनद को देखकर ही सरकारी डाक्टर सफर की इजाजत देता है। जहाज से उतरने के समय भी जांच-पड़ताल की वही मुसीबत सामने आई। जहाज पर ही हमें सरकारी डाक्टर के सामने हाजिर होना पड़ा। हमारी सनदों को देखकर और हमारी कलाई पर जहाजी मुहर लगाकर वह हमें पास करता गया।

कालापानी में सरकारी अफसरों को छोड़ किसी और को कुली नहीं मिलता। यदि मिलता है तो तभी जबकि किसी सरकारी अफसर से लाग-लगाव हो। जहाज पर ही पोर्ट ब्लेअर के एक व्यापारी से मेरा परिचय होगया था। इसलिए मैं पीठ पर सामान लादने की मुसीबत से बच गया। दूसरी मुसीबत थी सवारी की, क्योंकि सरकारी अफसरों की जीप या कार ही बंदरगाह तक आ सकती थी। किराये पर चलनेवाली बस को बंदरगाह से लगभग आधा मील दूर खड़ी होना पड़ता था। उस बस पर बड़ी भीड़ थी। किसी तरह मुझे जगह मिल गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



पोर्ट ब्लेअर की खास बस्ती और बाजार का नाम 'अबर्डीन' है, बंदरगाह से करीब तीन मील दूर। सूरज छिपने के बा मैं बाजार में आगया और एक धर्मशाला में अपना डेरा डाला।

: २ :

भारत के सभी हिस्सों, सभी धर्मों और जातियों के कैदी वहां भेजे जाते थे। जब घर-बारी जीवन बिताने की ओर सबका रुझान हुआ तो शादी-ब्याह की समस्या भी सामने आने लगी। शुरू-शुरू में कुछ वर्षों तक स्त्री-कैदी भी वहां भेजी जाती थीं। पुरुष और स्त्री कैदियों को एक-दूसरे से मिलने की आजादी दी जाने लगी। जब मन मिल गया तो वे बाकायदा शादी करके गृहस्थ बनने लगे। इस तरह रोटी-बेटी के रिश्ते में जात-पांत का खटराग अपने आप खतम होता गया। शादी के लिए एक खास जगह निश्चित की गई, जहां धीरे-धीरे 'शादीपुर' नामक एक गांव बस गया।

सारे कालापानी में कैदियों से बने समाज की आबादी अभी पच्चीस-तीस हजार से ज्यादा नहीं है, मगर इस थोड़ी-सी आबादी में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई और बौद्ध, सभी धर्मों के माननेवाले लोग हैं। इसलिए वहां मंदिर हैं, मस्जिदें हैं, सिखों के गुरुद्वारे, ईसाइयों के गिरजाघर और बौद्धों का एक फया भी है। मगर इतने मजहबों के होते हुए भी वहां धार्मिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



कट्टरता नहीं है। औरों की तो बात क्या, हिंदू-मुसलमानों में भी रोटी-बेटी का संबंध वहां चालू है। वहां मुसलमान भी बड़ी श्रद्धा से मंदिरों में जाकर चरणामृत और प्रसाद लिया करता है। एक बंगाली की शादी मद्रासिन से, मद्रासी की शादी मराठिन, गुजरातिन या पंजाबिन से और पंजाबी की शादी दूसरे सूबों की स्त्रियों से मजे में हो जाती है और इस आम रिवाज के कारण जातीयता और प्रांतीयता नाम की चीज वहां नहीं है। वे सभी अपनेको 'अंडमानी' कहने में गर्व अनुभव करते हैं। सबकी भाषा भी वहां एक है। स्त्री-पुरुष सभी घर-बाहर सब जगह हिंदी बोला करते हैं।

अब वहां बंगाली शरणार्थियों के बसाये जाने के कारण बंगला बोलनेवालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। बंगाली लोग अपनी भाषा, रीति-रिवाज और रहन-सहन से इतना प्रेम करते हैं कि पहले के अंडमानी उन्हें अपनेसे गैर समझने लगे हैं। मगर उम्मीद है कि अलगाव की यह भावना धीरे-धीरे कम होती जायगी।

मेरे पहुंचने के चार-पांच दिन बाद वहां होली थी। अंडमानी समाज की नजदीक से झांकी लेने के खयाल से मैं भी कपड़े खराब करने पर तुल गया। अबर्डीन बाजार में होली का रंग खूब जमा हुआ था। मैं भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



उसमें शामिल हो गया। देखकर बड़ी खुशी हुई कि क्या हिंदू और क्या मुसलमान और क्या सिख और ईसाई, सभी होली के रंग में रंगे हुए थे। एक-दूसरे पर रंग की पिचकारी छोड़ने में विभोर हो रहे थे। बाहर और भीतर से एक थे। न कोई अलगाव था, न मनमुटाव।

अंडमानियों में तलाक का आम रिवाज है। स्त्रियों का पहनावा एक जैसा है—साड़ी और ब्लाउज, मगर पुरुषों का एक जैसा नहीं है। नौजवानों में सूट-बूट का रिवाज हो चला है, मगर बूढ़े-बुजुर्ग लोग धोती-कुरता ही पहनते हैं। अंडमानी समाज में बर्मी लोग भी हैं। उनके रीति-रिवाज और पहनावा अपने देश जैसा है।

भारत के दूसरे लोगों से अंडमानी लोग ज्यादा सुखी हैं। वहां भूखा-नंगा कोई नहीं है। मगर शराब-मांस और जुए का वहां खूब प्रचार है। इस विलासी जीवन के कारण वे लोग ऊंचे चढ़कर सोचने के आदी नहीं हैं। एक सरकारी हाई स्कूल है, लेकिन पढ़ाई-लिखाई के मामले में वे अब भी बहुत पिछड़े हैं। मेह-मान-नवाजी मुझे कम दिखाई दी। लेकिन एक सबसे बड़ी इस खूबी का पता चला कि कैदियों से बने उस समाज में चोरी की आदत नहीं है!

अंडमानियों की आबादी यद्यपि उत्तरी अंडमान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



तक के कई द्वीपों में फैली हुई है, लेकिन सबसे ज्यादा आबादी दक्षिणी अंडमान के 'पोर्ट ब्लेअर' जिले में है और उससे भी ज्यादा पोर्ट ब्लेअर की अबर्डीन बस्ती में। अकेले अबर्डीन में आठ-नौ हजार लोग होंगे।

कालापानी में सिर्फ दो मौसम होते हैं--वर्षा और बसंत। मई से लेकर दिसम्बर तक आठ महीने वर्षा और जनवरी से अप्रैल तक चार महीने बसंत। पृथ्वी बीचवाली रेखा के पास होने के कारण यहां ठंड नहीं होती, लेकिन चारों ओर समुद्र से घिरा होने के कारण यहां गरमी भी ज्यादा नहीं होती, क्योंकि समुद्र की लहरों पर से छन-छनकर आती हुई हवा अपने साथ की नमी से यहां की गरमी को कम करती रहती है। इस जलवायु के कारण ही यहां वर्षा बहुत होती है और पेड़-पौधे आसानी से उगते हैं। यही कारण है कि यहां के जंगल बड़े घने हैं। पेड़ काफी बड़े हैं। इन जंगलों की लकड़ियों के व्यापार से सरकार को बड़ा लाभ है और इन जंगलों की कटाई और सफाई के लिए बिहार और मद्रास के हजारों मजदूर 'गिरमिटिया' बनाकर यहां लाये जाते हैं। इन मजदूरों को दो साल तक काम करते रहने के शर्तनामे पर दस्तखत या अंगूठे का निशान देना पड़ता है। इनकी मजदूरी बंधी हुई होती है। शर्तनामे की मियाद खतम होने पर वे अपनी इच्छा से वहां बस भी सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



यहां की जमीन बड़ी उपजाऊ है। खास उपज धान, लकड़ी और नारियल है। वैसे इस जमीन में सभी तरह के अनाज और साग-सब्जी पैदा किये जा सकते हैं।

एक एकड़ में पचास-साठ मन धान पैदा होना कोई बड़ी बात नहीं मानी जाती। कुछ लोगों ने नारियलों के अनेक बाग लगा रखे हैं, जिनके व्यापार से उन्हें कम लाभ नहीं होता। दियासलाई की तीलियां बनाने का एक कारखाना भी है।

बंगाली शरणार्थियों के आने के बाद से साग-सब्जी की खेती में तरक्की शुरू हो गई है। समुद्री मछलियों के अलावा जंगली हिरन और मुर्गी का मांस ये लोग ज्यादा खाते हैं। यही कारण है कि हर अंडमानी के घर के आगे-पीछे पालतू मुर्गियों की टोलियां कुड़कती और फुदकती नजर आती हैं।

उत्तरी अंडमान में आधे मन तक के तरबूज होते हैं। दो-ढाई सेर का बैंगन तो आम बात है। फलों में आम, कटहल, केले और अमरूद होते हैं। नारियल के डाब का पानी पीने का खूब रिवाज है।

: ३ :

वहां के मूल निवासियों की शक्ल-सूरत और रहन-सहन का हम भारतीयों से कोई मेल नहीं है। उनके औरत-मर्द आज भी नंग-धड़ंग रहने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करते। वे अन्न खाना नहीं जानते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



मांस-मछलियों के शिकार पर जीते हैं। बेफ़िक्री की जिंदगी बसर करते हैं और उनका खास हथियार तीर और धनुष है।

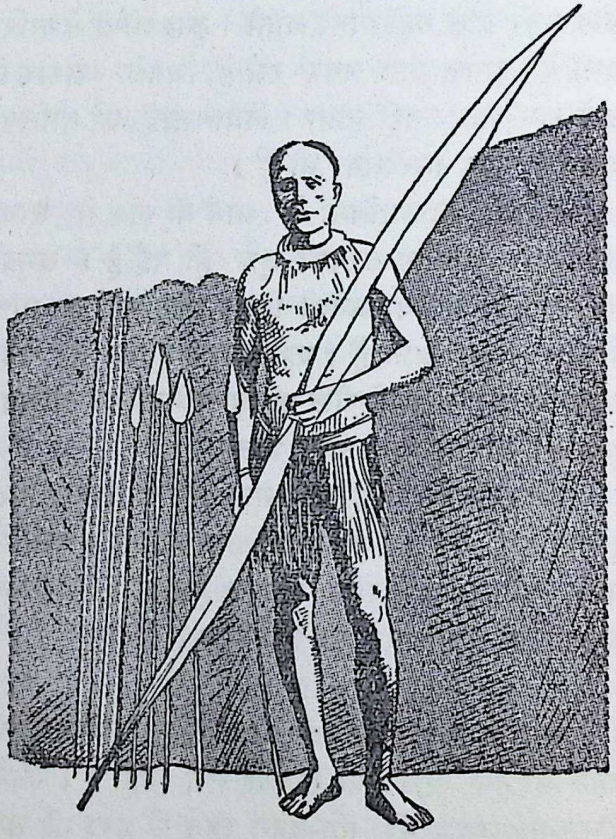

अंडमान का एक मूल निवासी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



मैं सरकारी पास लेकर एक लकड़ी लादनेवाले जहाज से उत्तरी अंडमान की ओर चला। दूसरे दिन सवेरा होते ही जहाज एक टापू के किनारे जा लगा। यहां से लकड़ी लादकर जहाज को पोर्ट ब्लेअर वापस जाना था। जंगलात के अफसर और दो कांस्टेबलों के साथ मैं टापू के भीतर गया। जंगल की कटाई और सफाई हो रही थी। पेड़ों की लंबाई-चौड़ाई देखकर मैं दंग रह गया। कुछ दूर आगे जाने पर एक अजीब शक्ल का आदमी कंधे पर बंदूक लिये हमारे सामने आ गया। जंगलात के अफसर मुस्कराते हुए आगे बढ़े और उस आदमी के कंधे पर हाथ रखकर मुझसे बोले "ऐसी शक्ल कभी देखी है आपने ? यह इस जंगल का राजा है।" फिर उसके कंधे को झक-झोरते हुए बोले, "क्यों रे कोट्टा, है न तू ? बोलता क्यों नहीं?" कोट्टा जवाब में अपने बत्तीसों पीले दांत दिखाता हुआ खिलखिला पड़ा।

कोट्टा का कद बिल्कुल ठिगना था और रंग कोयले-जैसा काला, आंखें गोल-गोल, पीली और चमकीली। टूटी-फूटी हिंदी वह बोल लेता था। मालूम हुआ कि अंडमान की बारह जंगली जातियों में कोट्टा 'येरावा' जाति का था। अब वह जंगल में सरकारी नौकर था। इसलिए नंग-धड़ंग न होकर निकर-बनियान पहने हुए था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



इन जंगली जातियों में 'जरावा' जाति के लोग अभी तक सरकार के हाथों में नहीं आ सके। वे घने जंगल में छिपे रहते हैं। कभी कोई सरकारी अफसर या पुलिस का आदमी उनके पास से गुजरता है तो वे अपने तीखे तीरों का उन्हें निशाना बनाये बिना नहीं रहते। उनके तीरों की नोक जहर में पगी होने के कारण वे बड़े मारू होते हैं।

इन्हीं जंगलियों में 'उङ्गी' जाति के लोगों को मैंने पोर्ट ब्लेअर की गलियों में देखा था। ये लोग छठे-छमाह अपने द्वीपों से निकलकर पतली नाव पर समुद्र पार करके पोर्ट ब्लेअर आ जाते हैं। उन्हें मालूम है कि वहां नंगा नहीं जाना चाहिए। इसलिए चार अंगुल की कौपीन वे जरूर पहन लेते हैं। अंग्रेजों के जमाने से ही यह रिवाज चला आ रहा है कि जब कभी वे पोर्ट ब्लेअर आते हैं, चीफ कमिश्नर की ओर से उन्हें बतौर भेंट के एक-एक निकर और बनियान के अलावा सेर-आधा सेर चीनी और तम्बाकू दिया जाता है। इस भेंट की वसूली के निमित्त ही वे आते हैं। अपने द्वीपों में पहुंचते ही वे निकर और बनियान फेंक देते हैं। चीनी फांक जाते हैं और तंबाकू चुरट बनाकर पी जाते हैं।

इन सभी जातियों के अपने अलग-अलग द्वीप हैं। उनकी बोलियां भी अलग-अलग हैं। जंगली हिरन, सूअर, वन-मुर्गी के अलावा समुद्र से मछली का शिकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



करके जीते हैं। वे अपने तीखे तीरों का वार पानी पर तैरती मछलियों पर भी बड़ी कामयाबी से करते हैं। सारे अंडमान में इन जंगलियों की तादाद पांच-छः हजार है, पर अब दिनों-दिन घटती जा रही है।

इन जंगलियों को यह शायद नहीं मालूम कि उनके द्वीपों पर किसी अन्य जाति का कब्जा है। वे अपनेको अपने द्वीप का मालिक मानते हैं। अंग्रेजों के जमाने की बात है : चीफ कमिश्नर इनके जंगल में गया था। उन्होंने सलाम नहीं किया। चीफ कमिश्नर की ओर से सलाम करने के लिए इशारा किया गया। जवाब मिला, "पहले तुम सलाम करो तो हम करेगा! तुम 'पोट बिलियर' का राजा है, हम अंडमान का राजा है। तुमसे बड़ा है।"

: ४ :

अब हम उन द्वीपों की भी सैर करें, जो कालापानी का हिस्सा होते हुए भी अंडमान के द्वीपों से अलग हैं। उन द्वीपों के नाम निकोबार हैं, जो अंडमान के दक्षिण में सौ-सवा सौ मील आगे बसे हुए हैं।

अंग्रेजों के जमाने से ही यह रिवाज चला आ रहा है कि हर साल अप्रैल के महीने में अपने दल-बल के साथ चीफ कमिश्नर निकोबार के द्वीपों की यात्रा करते हैं। चीफ कमिश्नर की यात्रा-पार्टी में मैं भी शामिल हो गया। हमारा 'महाराजा' नामक जहाज रात के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



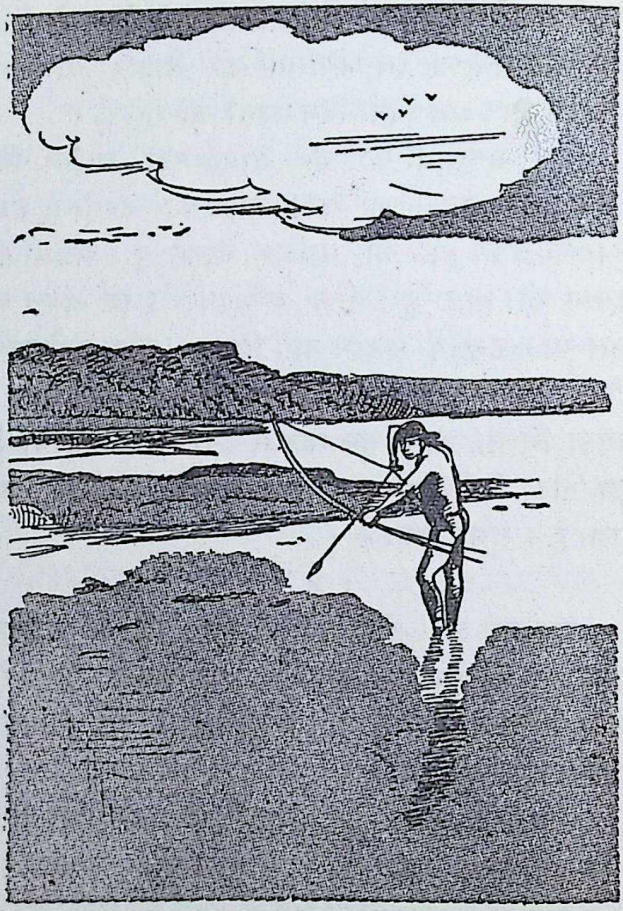

पानी पर तैरती हुई मछलियों का शिकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I



लगभग बारह बजे पोर्ट ब्लेअर बंदरगाह से रवाना हुआ। समुद्री हवा के मीठे थपेड़े खाकर हम बहुत जल्द निद्रा माता के आंचल में जा छिपे। दूसरे दिन सुबह नींद खुली। चारों ओर समुद्र की मचलती हुई लहरों के सिवा और कुछ दिखाई न दे रहा था। दिशाओं के ओर-छोर को छूता हुआ समुद्र का गहरा काला पानी फैला हुआ था और सारा आकाश एक तनी हुई विशाल छतरी की तरह चारों ओर से इस पानी को ढके हुए जान पड़ता था।

दिन के लगभग १ बजे हमारा जहाज उस द्वीप के किनारे से लगभग आधा मील दूर समुद्र में लंगर डाल-कर खड़ा हो गया! घने जंगलों से ढके होने के कारण द्वीप का भीतरी भाग दिखाई न दे रहा था, लेकिन हरे-हरे पेड़ों की कतारों से सुशोभित उसका किनारा साफ दिखाई दे रहा था। पूछने पर मालूम हुआ कि इस द्वीप का नाम 'छोटा अंडमान' है। यह अंडमान के द्वीपों के बिल्कुल दक्षिणी छोर पर खड़ा है!

अब उस द्वीप के भीतर जाने की तैयारी होने लगी। जहाज से बंधी हुई दो मोटर-बोटें समुद्र में उतारी गईं। थोड़े-से लोग ही उनमें जा सकते थे। इस द्वीप के मूल निवासी 'उङ्गी' कहे जाते हैं। इक्कीस उङ्गी पुरुष पोर्ट ब्लेअर से ही हमारे साथ आ रहे थे। उन्हें भी द्वीप के भीतर जाना था। चीफ कमिश्नर के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



गिने-चुने सहयोगियों के साथ मैं भी मोटर-बोट पर बैठकर किनारे पहुंचा और साथ के उन उङ्गियों के बताये रास्ते से हम द्वीप के भीतर पहुंचे। घने जंगल के बीच एक छोटा-सा खुला मैदान था जिसमें कुछ झोंपड़ियां खड़ी थीं। हमें देखते ही ठिगने कद की काली-काली नंग-धड़ंग औरतें भागकर जंगल में जा छिपीं। कुछ नंग-धड़ंग बच्चे तनिक डरे हुए-से, कौतूहलभरी आंखों से हमें देखने लगे। और कुछ पुरुष उङ्गी झट कौपीन से अपनी लाज ढककर हमारे सामने आ खड़े हुए। चीफ कमिश्नर ने उन्हें सलाम किया। हर आदमी को एक-एक निकर-बनियान तथा चीनी और तंबाकू दिया। इस भेंट को पाकर वे खुश हो उठे। हाथ के इशारे से ही बातें हुईं।

साथ के वे इक्कीस उङ्गी वहीं रह गये और हम लगभग डेढ़ घंटे बाद अपने जहाज पर वापस आगये। रात के दस बजे जहाज को आगे चलना था। सूरज अब छिप चुका था। अंधेरे की हल्की छाया समुद्र पर फैल चुकी थी। इसी बीच हमने देखा कि द्वीप की ओर से कुछ जलती हुई मशालें हमारे जहाज की ओर बढ़ी आ रही हैं। कुछ मिनटों में ही वह रोशनी जहाज के बिल्कुल पास आ पहुंची। उस रोशनी में हमें साफ दिखाई दिया कि पांच हट्टे-कट्टे उङ्गी ुरुष एक लंबी, पतली, नुकीली नाव पर बैठे खूब तेजी से पतवार चला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



रहे हैं। वह नाव जहाज के किनारे से आ लगी। नाव को जहाज से बांधकर वे सीढ़ी के सहारे झट डेक पर आ पहुंचे और हाथ के इशारे से अपने आने का मतलब बताने लगे। लोगों को समझते देर न लगी कि वे नेकर, बनियान, चीनी, तंबाकू की भेंट वसूलने आये हैं। जिस समय चीफ कमिश्नर की पार्टी द्वीप में पहुंची थी, वे कहीं जंगल में शिकार पर थे। घर वापस आने पर जब उन्हें मालूम हुआ तो वे भी उस भेंट की वसूली के लिए दौड़ पड़े।

वे सब एक-एक कौपीन मात्र पहने थे, शेष सारा बदन नंगा था। उनके शरीर की मजबूत गठन पर ईर्ष्या हो रही थी। सबके हाथ में एक-एक तीर-कमान भी था। सरकारी पुलिस के एक कांस्टेबल ने एक के हाथ से तीर-कमान लेकर उसकी डोरी चढ़ाने की कोशिश की, मगर डोरी चढ़ न सकी। तब उस उज्जी ने अपनी खींसे निपोरकर खिलखिलाते हुए उसके हाथ से कमान लेकर बड़ी आसानी से उसे झुकाकर डोरी चढ़ा दी और फिर उसपर तीर चढ़ाकर निशाना साधने का तरीका भी दिखा दिया। कमान बांस के मजबूत फट्टे को बरीकी से छील-छालकर बनाया गया था। तीर की नोक लोहे की थी, मूठ भी लोहे की, परंतु धड़ बांस की मजबूत कमची का था।

असिस्टेंट पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने उनसे एक तीर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



कमान लेकर बदले में निकर, बनियान, पाव रोटी का एक बड़ा टुकड़ा और पानी पीने का जग दे दिया। भेंट वसूल कर वे हँसी-खुशी वापस चले गये। जहाज ठीक समय पर आगे रवाना हो पड़ा।

दूसरे दिन सवेरे फिर एक अजीब नजारा सामने आया! सवेरे का नाश्ता करके मैं डेक की रेलिंग के किनारे चहल-कदमी कर रहा था। इसी बीच कई लोगों की कौतूहलभरी आवाज सुनाई दी—"वह देखो! उधर देखो!" और तब मेरी भी निगाह उस ओर दौड़ पड़ी। देखकर बड़ा अचरज हुआ! हजारों मछलियों का झुंड जहाज की तरफ दौड़ पड़ा था! किसीका भी वजन मन-डेढ़ मन से कम नहीं लग रहा था। वे छलांगें भर-भरकर जहाज की ओर दौड़ने लगीं! लेकिन फिर भी वे जहाज की दस मील फी घंटे की चाल का मुकाबला नहीं कर पा रही थीं।

उन मछलियों के शील-स्वभाव के बारे में एक आदमी ने बताया कि वे बड़ी नेक होती हैं। अगर उनके इलाके में कोई आदमी डूब जाय तो उसे निगलने के बजाय उसके शरीर को ठेल-ठालकर किनारे तक पहुंचा आती हैं! उन मछलियों की दया की यह कहानी सुनकर अचरज भी हुआ, खुशी भी हुई!

लगभग नौ बजे सवेरे हमारा जहाज एक दूसरे सुंदर द्वीप के किनारे आ लगा। किनारे से लगभग दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



फर्लांग दूर समुद्र में वह लंगर डालकर खड़ा हो गया। मालूम हुआ कि यह निकोबार के द्वीपों में पहला द्वीप 'कार निकोबार' है। किनारे से कई नावें बड़ी तेजी से जहाज की ओर चल पड़ीं। उन नावों पर कार निकोबार के सरकारी कर्मचारी और वहां के मूल निवासी थे। एक नाव डाबों से भरी थी। सीढ़ी के सहारे वे जहाज पर पहुंचकर उन डाबों को अपने तेज हंसिये से काट-काटकर बड़े आदर से उसका स्वादिष्ट पानी हमें पिलाने लगे। निकोबार के मूलवासी अंडमान के मूलवासियों की तरह काले-कलूटे या कुरूप न थे। लेकिन कद में उन्हीं-जैसे थे।

उनके चेहरे की बनावट मंगोलों-जैसी थी—नाक जरा चिपटी हुई, आंखें तनिक भीतर की ओर और गाल की हड्डियां जरा उभरी हुईं। रंग गोरा और गेंहुआ। शरीर खूब कसा हुआ। पहले ये लोग भी नंग-धड़ंग रहा करते थे, लेकिन चालीस-पचास साल से पादरियों द्वारा उनमें धर्म और शिक्षा के प्रचार के कारण कपड़े पहनने का रिवाज चालू हो चला है। बूढ़े लोग अब भी कौपीन पहने होते हैं और औरतें कमर से नीचे एक लुंगी मात्र। जवान लड़कियों का भी सीना ढका नहीं होता। मगर स्कूलों में पढ़ने-वाली लड़कियों की पोशाक जाकेट और लुंगी होती है। लड़के निकर और बनियान पहनते हैं। लड़कियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



भड़कीले कपड़ों को ज्यादा पसंद करती हैं। इस पोशाक में वे बड़ी सुंदर दीखती हैं।

वे लोग अन्न नहीं खाते। नारियल का पानी और उसके नीचे की मलाई इनका मुख्य भोजन है। केला, पपीता, केवड़ा और रतालू भी खाते हैं। जंगली हिरन और सूअर के अलावा मछली का शिकार भी करते हैं।

चीफ कमिश्नर की पार्टी के साथ मैं भी नाव से किनारे पहुंचकर द्वीप के भीतर पहुंचा। उस घाट का नाम 'मूस' था। कार निकोबार के कुल चौदह-पंद्रह गांवों में 'मूस' सबसे बड़ा गांव है, जहां प्राइमरी स्कूल है, अस्पताल है, एक बड़ा गिर्जाघर है और ईसाइयों का एक बड़ा कब्रगाह भी।

अब हम जीप और ट्रक पर लदकर मस से चार-पांच मील आगे 'मलाका' गांव की ओर चले जहां निकोबार के द्वीपों की राजधानी है, जहां असिस्टेंट कमिश्नर का आफिस और निवास है। वहीं हमें दोपहर का भोजन करना था।

जीप से मलाका की ओर बढ़ते हुए हम उस द्वीप की सुंदरता पर मुग्ध हो रहे थे! सड़क की रेतीली सफेदी को छोड़ बाकी सारा द्वीप हरियाली से ढका हुआ मालूम पड़ रहा था। उस हरियाली में छिपे हुए गांव दिखाई नहीं दे रहे थे। नारियल के लंबे वृक्ष डाबों से लदे हुए थे। केले की हरी-हरी झाड़ियां भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



फलों से लदी थीं। सुपारी और केवड़े के वृक्ष भी बड़े मनोहर थे। नारियल की छोटी-छोटी झाड़ियों में तो स्वयं सुंदरता मुस्कराती दीख रही थी। यहां अंडमान के द्वीपों का डरावनापन कहीं भी नजर नहीं आ रहा था।

असिस्टेंट कमिश्नर के यहां हमने दोपहर का भोजन किया। निकोबारी बच्चों की स्वयंसेवक टुकड़ी की कवायद बड़ी अच्छी रही! फिर दिन के तीसरे पहर हम जीप और ट्रक पर सवार हो मूस गांव की ओर चले। गांव के स्कूल के मैदान में आज चीफ कमिश्नर के स्वागत में खेल का आयोजन था। खेल में दो पक्ष थे--एक तरफ निकोबारी नौजवान और दूसरी तरफ पोर्ट ब्लेअर से आये हुए सरकारी कर्मचारी। केवल रस्सा-कस्सी के खेल में ही पोर्ट ब्लेअरवालों की जीत रही। बाकी सभी खेलों में निकोबारियों की। और गेंद के खेल में तो निकोबारियों की कुशलता देख मैं दंग रह गया! घंटे भर एक-एक करके दस गोल बनाकर उन्होंने पोर्ट ब्लेअरियों को बिल्कुल मात दे दी! विजयी खिलाड़ियों को चीफ कमिश्नर की मेम ने अनेक इनाम दिये।

शाम को निकोबारी लड़कों ने हिंदी में एक नाटक खेला। असिस्टेंट कमिश्नर ने यहां खुद हिंदी का प्रचार शुरू कर दिया था। उन्होंने ही महाभारत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



की 'युधिष्ठिर-यक्ष-संवाद' नामक कहानी को 'जहरीला तालाब' नाम देकर उन लड़कों को नाटक खेलने के लिए तैयार किया था। नाटक के मंच पर धोती पहने हुए और हिंदी बोलते हुए वे निकोबारी बच्चे बड़े भले दिखाई दे रहे थे।

नाटक खत्म होने पर चीफ कमिश्नर अपनी पार्टी-सहित जहाज पर वापस चले गये और मैं जहाज की वापसी के इंतजार में सप्ताह भर के लिए कार निकोबार में ही रुक गया, क्योंकि उन द्वीपों में हिंदी के प्रचार के लिए मुझे वहां कुछ व्यवस्था करनी थी। रकबे में सबसे छोटा है, मगर आबादी में निकोबार के इक्कीस द्वीपों में सबसे बड़ा, क्योंकि इसकी जमीन बड़ी चौरस होने के कारण बसने के लायक है। निकोबार के सभी द्वीपों की कुल आबादी पंद्रह-सोलह हजार के करीब है, जिसमें अकेले इस छोटे द्वीप की आबादी दस-ग्यारह हजार है। इसलिए सरकार का बड़ा दफ्तर यहीं है। यहां असिस्टेंट कमिश्नर की निगरानी में हुकूमत का काम चलता है। पादरियों का एक बड़ा गिर्जाघर है। मगर बरसों की कोशिशों के बावजूद भी सभी लोग ईसाई नहीं बन पाए। ईसाई निकोबारियों के दो नाम होते हैं--एक निकोबारी और दूसरा अंग्रेजी। गांवों में कई सरकारी स्कूल भी हैं, जिनमें अपर प्राइमरी तक पढ़ाई-लिखाई का प्रबंध है। स्कूलों में लड़कियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



की संख्या लड़कों से कम नहीं देखी। रोमन लिपि में उन्हें 'निकोबारी' की शिक्षा दी जाती है। अंग्रेजी के अलावा अब हिंदी भी पढ़ाई जाने लगी है। देवनागरी में उनके हाथ की लिखावट की खूबसूरती देखकर तो मैं दंग रह गया।

मैंने गांवों में जाने पर वहां गंदगी नहीं देखी, क्योंकि मिट्टी रेतीली होने के कारण कीचड़ नहीं होती। यहां भी अंडमान की भांति ही घनघोर वर्षा होती है, मगर पानी को समुद्र में जाते देर नहीं लगती। इसलिए जमीन सूखी और स्वच्छ बनी रहती है। गांव के घरों के आस-पास कटहल, पपीता और केले के पेड़ लगाने का वहां आम रिवाज देखा।

लोगों के घर कुछ-कुछ अंडे-जैसे गोल होते हैं, जिनके फर्श बांस और काठ की बल्लियों पर जमीन से ६-७ फुट ऊंचाई पर होते हैं। फर्श के नीचे की जगह बारहदरी-सी खुली होने के कारण बैठकखाने के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। लेकिन घर में खिड़की एक भी नहीं होती। हवा दरवाजे से अथवा फर्श के फट्टों के छेद से होकर घर में दाखिल होती है। सारा घर एक कमरे के रूप में होता है, जिसमें प्रवेश करने के लिए दरवाजे से बांस की एक सीढ़ी लगी होती है। घर में अंदर जाकर बांस की खपच्चों को बड़ी कारीगरी से तिरछे जोड़कर उनपर बनाये गये घास-फूस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



के छप्पर की खूबसूरती और मजबूती देखते ही बनती है। ज्यादातर आठ-दस घरों का एक गांव होता है।

हर गांव में एक मुखिया होता है, जिसपर आपसी झगड़ों के निपटारे की जिम्मेदारी होती है। वैसे झगड़े होते ही कम हैं, क्योंकि झगड़ों के कारणों की अभी वहां कमी है। अमीरी और गरीबी वहां नहीं है। कुछ लोग सरकारी नौकर जरूर हैं, मगर आपस में कोई किसीका नौकर नहीं है। गुजारे के लिए दौड़-धूप या अधिक मेहनत की जरूरत नहीं रहती। सवेरे नारियल का पानी, दूध और मलाई खाकर वे जंगल में चले जाते हैं। मामूली मेहनत का काम, जैसे पेड़-पौधों की जड़ को साफ कर देने के सिवा कोई कठिन काम नहीं करते। फिर शाम से पहले कंधे पर बहंगी में नारियल के डाब और केले आदि लटकाए घर वापस आ जाते हैं।

स्त्री-पुरुष के अनुचित संबंध को लेकर कभी-कभी कुछ झगड़ा जरूर होता है, मगर उसे शांत होते देर नहीं लगती। मार-पीट की नौबत नहीं आती। मुखिया उन्हें समझा-बुझाकर आपस में सुलह करा देता है, अथवा तलाक देकर दोनों पक्ष अलग हो जाते हैं। यद्यपि व्यभिचार को वे अच्छा नहीं मानते, तथापि बदचलनी के अपराध में कोई पति अपनी पत्नी को मार-पीट नहीं सकता। एक समय में एक मर्द एक ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



बीवी रख सकता है। अनमेल विवाह का रिवाज भी वहां दिखाई दिया।

ये लोग झूठ कम बोलते हैं। बेईमानी-शैतानी की तरफ झुकाव नहीं है। चोरी की आदत किसीमें भी नहीं। इनके घर पर कोई मेहमान जाय तो नारियल, केले और पपीते से खातिर करते हैं। अलग-अलग महीनों में इनके अलग-अलग त्योहार होते हैं, जिन्हें ये नाच-गाकर और खा-पीकर बड़े ठाठ से मनाते हैं। ऐसे अवसरों पर घर के दरवाजों पर सूअर की चर्बी भी टांगते हैं। नारियल की ताड़ी को शराब के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

निकोबारी लोग आपसी लेन-देन में सिक्के के तौर पर नारियल का इस्तेमाल करते हैं, मगर अब वे समय के प्रभाव से नोट और रुपये-पैसों को पहचानने लग गये हैं।

'होल चू'—अर्थात्—'ओ मेरे दोस्त' कहकर वे एक-दूसरे को पुकारते हैं। वहां 'हिनेंगो रालो'—अर्थात्—'नौजवान-सभा' नाम की एक संस्था भी है। यह संस्था निकोबारी नौजवानों की भलाई के हर पहलू पर ध्यान देती है। इस संस्था के जरिये वहां नारियल की लकड़ी की बनी चीजें, समुद्र के शंख और सीप तथा हाथ की बनी दूसरी चीजें भी बेची जाती हैं। वहां एक बहुत सुंदर सरकारी अस्पताल भी है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M



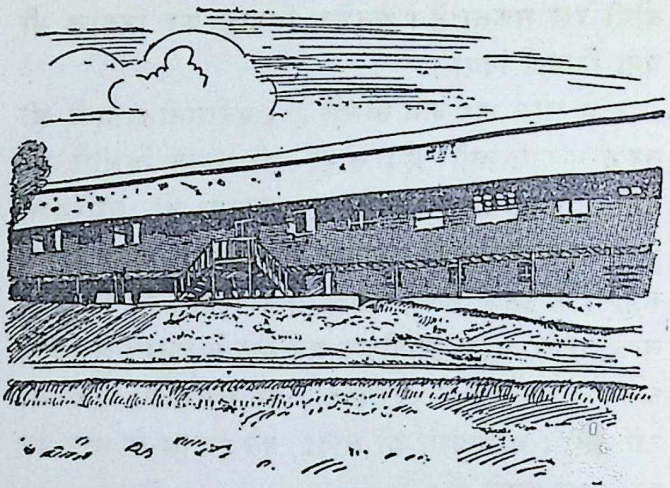

सरकारी अस्पताल

निकोबार के दूसरे द्वीपों के लोगों में भी कुछ इसी प्रकार का रिवाज है। 'चौरा' नामक द्वीप के निकोबारी जादू-टोने के लिए मशहूर हैं। जो लोग अभी ईसाई नहीं बने, वे अपने मुर्दों को न जलाते हैं, न दफनाते हैं, बल्कि उन्हें लकड़ी की एक छोटी नाव में रखकर पेड़ पर लटका देते हैं।

सातवें दिन चीफ कमिश्नर का जहाज कार-निकोबार के किनारे से फिर आ लगा। उस द्वीप की सुंदरता को नमस्कार करके मैं जहाज से पोर्ट ब्लेअर की ओर रवाना हो पड़ा।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

## समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर क बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. वे थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना ४० न०पै०



छः आना ४० न०पै०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu